दुनिया के फलक पर चमकेगा लखनऊ का चिकन

चिकनकारी को वैश्विक बनाने के लिए आइआइएम इंदौर ने **रोडमैप तैयार** किया, दिया प्रजेंटेशन

विवेक राव • लखनऊ

अब लखनऊ में चिकनकारी करने वाले कारीगर नहीं, आर्टिस्ट कहलाएंगे। चिकनकारी के कुर्ते का स्टैंडर्ड साइज भी तैयार होगा। इसकी डिजाइन और भी आकर्षक होगी। वैश्विक स्तर पर चिकनकारी को लाने के लिए ई-कामर्स प्लेटफार्म पर भी इसे तेजी से आगे बढ़ाया जाएगा। यहीं नहीं, इसकी कारीगरी करने वाले लोगों की कहानी भी उस प्रोडक्ट से जोड़कर उसकी ब्रांडिंग की जाएगी। चिकनकारी और उससे जुड़े सभी लोगों की बेहतरी के लिए भारतीय प्रबंध संस्थान (आइआइएम) इंदौर ने रोडमैप जारी कर दिया है। इसे जिला प्रशासन के सहयोग से आगे बढ़ाया जाएगा। शनिवार को जिलाधिकारी कार्यालय में आइआइएम के निदेशक प्रो. हिमांशु राय ने इसका प्रजेंटेशन दिया।

आइआइएम इंदौर ने चिकन कारीगरों की आय बढ़ाने, पलायन रोकने, उत्पादों को बाजार उपलब्ध कराने और डिजाइन सहित गुणवत्ता में सुधार के लिए जिला प्रशासन और आइआइएम इंदौर के बीच कुछ समय पहले एमओयू किया गया था। इसके आधार पर आइआइएम ने चिकनकारी से जुड़े उद्यमी और कारीगरों पर सर्वे कर रिपोर्ट तैयार की गई है। सर्वे टीम में आइआइएम इंदौर के निदेशक प्रो.हिमांशु राय के नेतृत्व में प्रो. भवानी शंकर और नवीन कृष्ण राय शामिल रहे। आइआइएम इंदौर के विशेषज्ञों की टीम ने चिकन उद्यमियों, कारीगरों और बाजार में जाकर इस उद्योग की समस्या, संभावनाओं पर अध्ययन कर रिपोर्ट जारी की। इसका प्रजेंटेशन चिकन उद्योग से जुड़े लोगों की उपस्थिति में किया गया।

कलेक्ट्रेट के सभागार में चिकनकारी पर तैयार रिपोर्ट को रखते आइआइएम के निदेशक प्रो. हिमांशु राय, साथ में जिलाधिकारी सूर्यपाल गंगवार • सौजन्य : प्रशासन

वार्षिक आय और कारीगरों का प्रतिशत

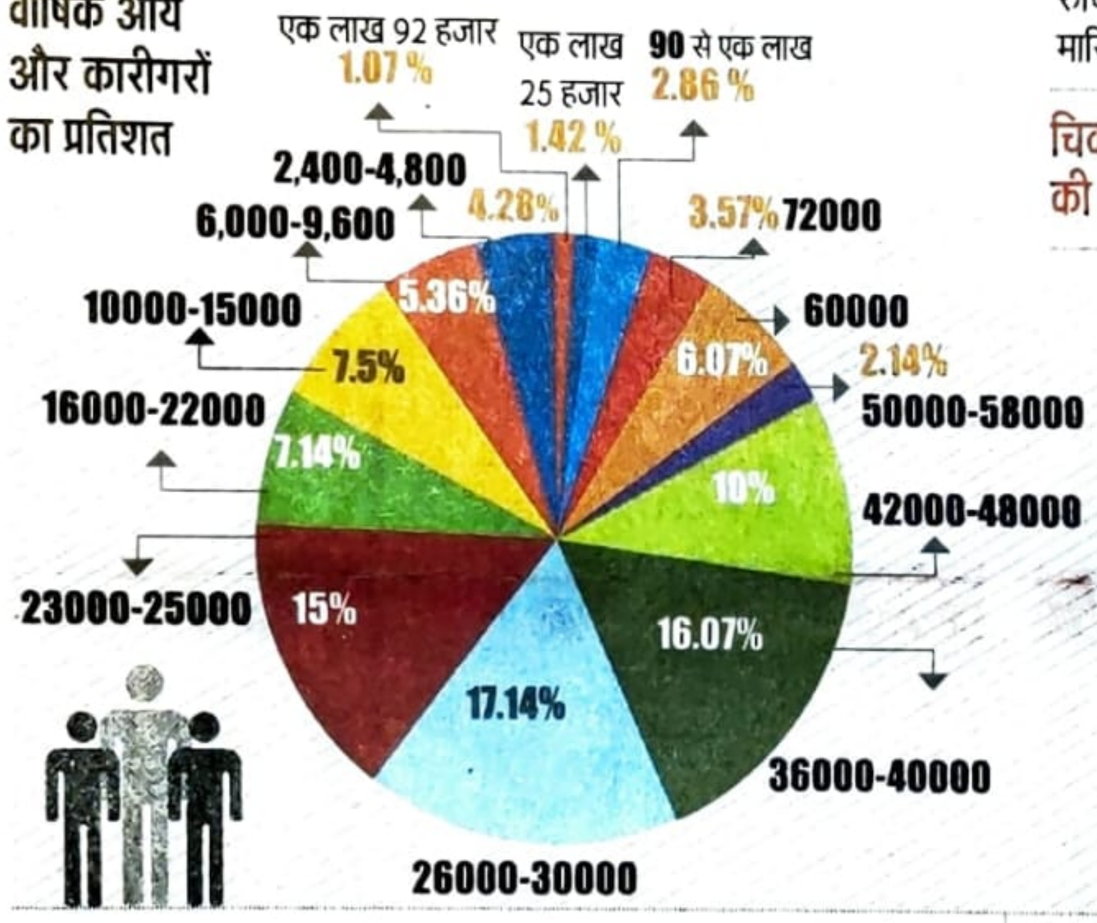

आइआइएम के दिए गए कुछ सुझाव

- सभी छोटे-बड़े चिकन उद्योग को लेकर फेडरेशन बनाया जाएगा। इसके माध्यम से बाजार, वित्त और अन्य जानकारी उद्यमियों और कारीगरों को दी जाएगी।
- छोटे कारीगरों के काम को भी ई-कामर्स पर प्रमोट किया जाएगा।
- फेडरेशन से कारीगरों को पूरे साल चिकन का काम करने का मौका मिलेगा। फिलहाल अभी चार से पांच महीने ही उन्हें काम मिलता है।
- चिकनकारी कार्य में महिलाओं की रुचि बढ़ाने के लिए 12,661 रुपये मासिक पारिश्रमिक।
- चिकन के कुर्ते का स्टैंडर्ड साइज तय होगा। एस(छोटा), एम (मध्यम), एल (बड़ा) जैसे साइज को एक मानक पर रखा जाएगा।
- हाथ से बनने वाले चिकन के कपड़ों की ब्रांडिंग, जागरूकता।
- बेहतर पहचान के लिए जीआइ टैग के उपयोग में सुधार।
- फेडरेशन के माध्यम से कारीगरों को पूरा काम और अच्छी कीमत देने का प्रयास।
- चिकनकारी की डिजाइनिंग और गुणवत्ता में सुधार करके इसे और आकर्षक बनाया जाएगा।

चिकन कारीगरों की मांगें

- उत्पादों की अच्छी कीमत
- नियमित काम
- बाजार की उपलब्धता
- प्रशिक्षण और काम

एक प्रतिशत कारीगरों को ही पूरे साल मिलता है काम

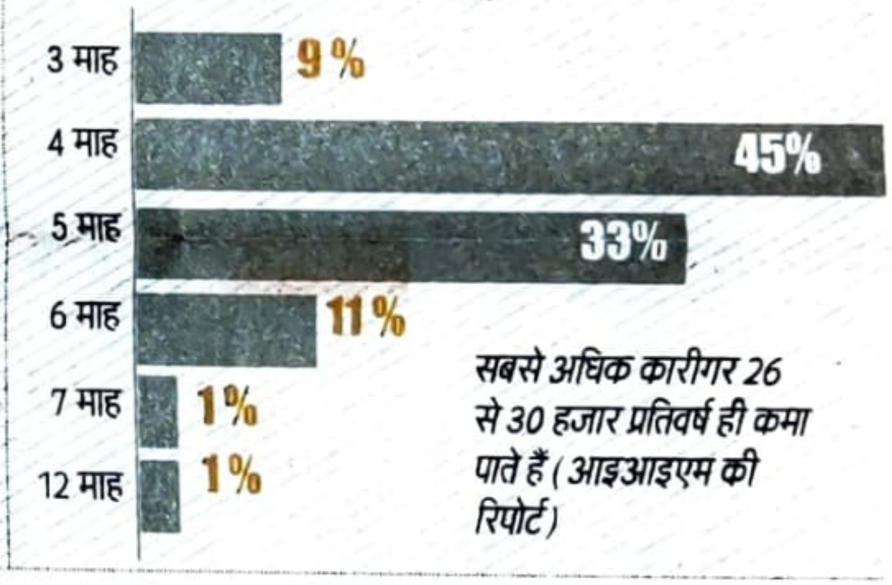

सबसे अधिक कारीगर 26 से 30 हजार प्रतिवर्ष ही कमा पाते हैं (आइआइएम की रिपोर्ट)

जिला प्रशासन की खाली भवनों में भी प्रदर्शनी

जिलाधिकारी ने बताया कि कारीगरों के काम को प्रदर्शित करने के लिए कलेक्ट्रेट सहित अन्य भवनों में भी जगह दी जाएगी जहां वह एक महीने तक अपने काम को प्रदर्शित कर सकेंगे। एयरपोर्ट अथारिटी से भी बात की जा रही है, जहां डिजिटल डिस्प्ले पर चिकनकारी के काम करने वाले लोगों की स्टोरी को दिखाया जाएगा।

दो प्रतिशत ही छोड़ना चाहते हैं चिकनकारी का काम

प्रो. हिमांशु ने बताया कि सर्वे में केवल दो प्रतिशत ही कारीगर काम छोड़ना चाहते हैं। पूरे साल काम नहीं मिलने पर भी उन्हें जितने समय का काम मिलता है वह करते हैं। अगर उन्हें पूरे साल काम मिले तो दूसरा काम करना नहीं चाहेंगे। चार से पांच महीने चिकनकारी का काम करने के बाद उन्हें मजबूरी में दूसरा काम करना पड़ता है।

प्रो. हिमांशु ने बताया कि 280 चिकनकारी से जुड़े लोगों के पास जाकर सर्वे किया गया, इसमें उनकी सरकार से अपेक्षाएं, रुकावटें, समस्याएं आदि को देखा गया। चिकन की साड़ी, कुर्ते और अन्य कपड़ों को तैयार करने में अधिकांश महिलाएं जुटी हुई हैं। रिपोर्ट में चिकन से जुड़े कारीगरों की आय को कैसे बढ़ाया जाए इस पर विशेष फोकस है। जिलाधिकारी सूर्यपाल गंगवार ने कहा कि आइआइएम इंदौर ने जो रोडमैप तैयार किया है उसके आधार पर इस उद्योग की मार्केटिंग, ब्रांडिंग और कारीगरों की बेहतरी के लिए जल्द ही काम किया जाएगा।